Pricing) वास्तव में वस्तु-कीमत निर्धारण की ...

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
(MARGINAL PRODUCTIVITY THEORY OF DISTRIBUTION)

वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त के अन्तर्गत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण किया जाता है। यह सिद्धान्त इस समस्या का समाधान आसानी से करता है कि साधनों का पारिश्रमिक किस प्रकार से निर्धारित किया जाय ? इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करने वाले प्रमुख अर्थशास्त्री जे. बी. क्लार्क (J. B. Clark), विक्स्टीड (Wicksteed), वालरस (Walras), श्रीमती जोन रॉबिन्सन (Mrs. Joan Robinson) तथा हिक्स (J. R. Hicks) हैं। सीमान्त उत्पादकता के सिद्धान्त को सामान्य सिद्धान्त भी कहा गया है, क्योंकि उसकी सहायता से उत्पत्ति के सभी साधनों की कीमत-निर्धारण समस्या का अध्ययन किया जाता है।

सिद्धान्त का सामान्य कथन (General Statement of the Marginal Productivity Theory)—सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त हमें बताता है कि साधन की कीमत का निर्धारण **साधन की उत्पादकता** (Productivity) से निर्धारित होता है और यह **उत्पादकता साधन की सीमान्त उत्पादकता** (Marginal Productivity) से तय होती है।

प्राय: यहां यह प्रश्न किया जाता है कि साधन की कीमत, साधन की उत्पादकता पर क्यों निर्भर करती है? इस प्रश्न के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि वस्तु और साधन की मांग में अन्तर है। वस्तु की मांग प्रत्यक्ष रूप से, उस वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता के आधार पर की जाती है, जबकि साधन की मांग **व्युत्पन्न मांग** (Derived demand) होती है। साधन की मांग इस बात पर निर्भर करती है कि '**साधन में उत्पादन करने की क्षमता कितनी है**' अर्थात् साधन की मांग '**साधन की उत्पादकता पर निर्भर करती है**', इसलिए यह कहा जाता है कि **जिस साधन की उत्पादकता जितनी अधिक होगी, उसकी मांग भी उतनी ही अधिक होगी और इसके विपरीत भी सही सिद्ध होगा।** यही कारण है कि साधन की कीमत का निर्धारण साधन की सीमान्त उत्पादकता से तय होता है।

साधन की सीमान्त उत्पादकता के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि **अन्य साधनों को स्थिर रखकर परिवर्तनशील साधन की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है, उसे साधन की सीमान्त उत्पादकता कहते हैं।**

सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की मान्यताएं (Assumptions of the Marginal Productivity Theory)

सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की प्रमुख मान्यताएं निम्नलिखित हैं :

(1) **पूर्ण प्रतियोगिता**—यह मान लिया गया है कि बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की दशा पायी जाती है। क्रेता और विक्रेता आपस में प्रतियोगिता के आधार पर साधनों का क्रय-विक्रय करते तो हैं, परन्तु वे आपस में एक-दूसरे को प्रभावित नहीं कर सकते हैं।

(2) **साधनों का प्रतियोगी बाजार**—उत्पत्ति के साधनों के द्वारा उत्पादित वस्तु का बाजार भी प्रतियोगी बाजार मान लिया जाता है।

(3) **उत्पत्ति के साधनों में समानता**—उत्पत्ति के साधन विशेष की इकाई समान गुणों, समान उत्पादन क्षमता तथा समान आकार-प्रकार की होती है और **साधन की विभिन्न इकाइयां एक-दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न** (Perfect substitutes) **भी होती हैं।**

(4) **परिवर्तित साधन की कीमत की जानकारी**—यह मान लिया गया है कि अन्य साधनों को स्थिर रखकर 'साधन विशेष' को परिवर्तित किया जाता है और परिवर्तित साधन की कीमत को ज्ञात कर लिया जाता है।

(5) **लाभ का अधिकतम करना**—प्रत्येक उत्पादक तथा फर्म का अन्तिम उद्देश्य यह होता है कि वह अपने लाभ में अधिकतम वृद्धि कर लेता है।

(6) **उत्पत्ति ह्रास नियम की मान्यता**—यह मान लिया गया है कि उत्पादन में उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Diminishing Returns) लागू होता है।

(7) सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त पूर्ण रोजगार की धारणा को मानकर कार्य करता है।

सीमान्त उत्पादकता का अर्थ
(MEANING OF MARGINAL PRODUCTIVITY)

अन्य साधनों को स्थिर रखकर परिवर्तनशील साधन की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है उसे साधन की सीमान्त उत्पादकता कहते हैं। दूसरे शब्दों में, साधन की एक अतिरिक्त इकाई से होने वाले उत्पादन को उस साधन की सीमान्त उत्पादकता कहा जाता है। प्रो. हिक्स (J. R. Hicks) के अनुसार, "**सीमान्त उत्पादकता जो किसी उपादान को सन्तुलन की दशा में मिलने वाले वास्तविक पुरस्कार का माप है, वह वृद्धि है जो किसी फर्म की उत्पत्ति में किसी उपादान की पूर्ति की एक इकाई बढ़ाने से सम्भव होती है। जबकि फर्म का संगठन उत्पादन के नये स्तर के साथ समायोजित हो गया हो, परन्तु फर्म के शेष संगठन में, जिसमें कीमतों की सामान्य प्रणाली भी सम्मिलित है, कोई परिवर्तन न हुआ हो।**" सीमान्त उत्पादकता को तीन प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है :

(1) **सीमान्त भौतिक उत्पादकता** (Marginal Physical Productivity or MPP)—जब कभी सीमान्त उत्पादकता को 'वस्तु की भौतिक मात्रा' में व्यक्त किया जाता है तब उसे 'सीमान्त-भौतिक उत्पादकता' (Marginal Physical Productivity or MPP) कहा जाता है। **जब उत्पादन के क्षेत्र में अन्य साधनों को स्थिर रखकर किसी एक साधन की एक अतिरिक्त इकाई को उत्तरोत्तर बढ़ाया जाता है, तब इस साधन के प्रयोग के परिणामस्वरूप कुल भौतिक उत्पादन में जो वृद्धि होती है उस अतिरिक्त वृद्धि को उस साधन की 'सीमान्त-भौतिक उत्पादकता' (MPP) कहा जाता है।**

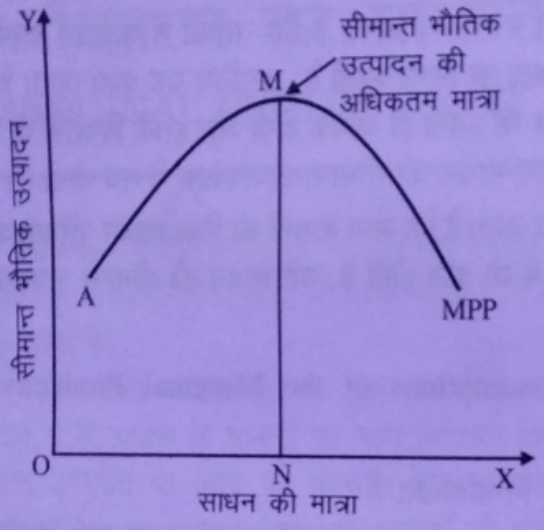

चित्र 1

उत्पत्ति ह्रास नियम अर्थात् परिवर्तनशील अनुपातों के नियम (Law of Variable Proportions) के क्रियाशील होने के कारण प्रारम्भ में परिवर्तनशील साधन की भौतिक उत्पादकता बढ़ती है। उत्पादकता बढ़ते-बढ़ते एक ऐसे बिन्दु पर पहुंच जाती है, जो सबसे अधिक होती है और इस चरम बिन्दु के बाद साधन की भौतिक उत्पादकता घटनी प्रारम्भ हो जाती है। इस व्याख्या को चित्र 1 से स्पष्ट किया जा सकता है।

चित्र में Y-axis पर साधन का सीमान्त भौतिक उत्पादन तथा X-axis पर साधन विशेष की इकाइयों को दिखाया गया है। सीमान्त भौतिक उत्पादकता रेखा (MPP-curve) A बिन्दु से M बिन्दु तक लगातार बढ़ती है। M बिन्दु पर भौतिक उत्पादकता सबसे अधिक होती है। M बिन्दु के बाद साधन की सीमान्त-भौतिक उत्पादकता घटने लगती है। जैसा कि हम बता चुके हैं परिवर्तनशील अनुपातों के नियम के क्रियाशील होने के परिणामस्वरूप, भौतिक उत्पादकता एक बिन्दु तक बढ़ती है और उसके बाद घटती है। सीमान्त भौतिक उत्पादकता वक्र का आकार उल्टे U (Inverted U-shape) होता है। इसको घण्टे के आकार या Bell-shaped भी कहते हैं।

(2) **सीमान्त आगम उत्पादकता** (Marginal Revenue Productivity or MRP)—फर्म या उत्पादक की नजर केवल इस पर ही नहीं कि उसे उसके साधन के द्वारा कितनी मात्रा में **भौतिक उत्पादन** उपलब्ध कराया जा रहा है, बल्कि उसकी नजर इस बात पर भी रहती है कि वस्तु को बेचकर उसे कितनी आय प्राप्त हो रही है, अर्थात् प्रत्येक फर्म या उत्पादक का हित सीमान्त-भौतिक उत्पादकता (MPP) की अपेक्षा सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) पर निर्भर है। अतः प्रत्येक फर्म या उत्पादक यह जानना चाहता है कि, किसी साधन की एक अतिरिक्त इकाई को लगाने से उसकी कुल आय में कितनी वृद्धि होती है। सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) को हम इस प्रकार से भी परिभाषित कर सकते हैं कि, **अन्य साधनों को स्थिर रखने के बाद, परिवर्तनशील साधन की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल आय में जो वृद्धि होती है, उसे साधन की सीमान्त आगम उत्पादकता कहते हैं।**

सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) को दूसरे शब्दों में भी प्रस्तुत किया जा सकता है। यदि हम सीमान्त भौतिक उत्पादकता (MPP) को सीमान्त आगम (MR) से गुणा कर दें, तो हमें सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) प्राप्त हो जायेगी। संक्षेप में,

$$MPP \times MR = MRP$$

(3) **सीमान्त उत्पाद का मूल्य** (Value of Marginal Product or VMP)—**'सीमान्त मूल्य उत्पाद' अथवा सीमान्त मूल्य उत्पादकता को तब प्राप्त किया जा सकता है, जबकि सीमान्त भौतिक उत्पादकता** (MPP) **को उत्पाद** (Product) की कीमत से गुणा कर दिया जाय।

दूसरे शब्दों में $VMP = MPP \times Price$

चूंकि पूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य $AR = MR$

इसलिए $VMP = MPP \times MR = MRP$

अतः यह कहा जाता है कि पूर्ण प्रतियोगिता में सीमान्त उपज का मूल्य या सीमान्त मूल्य उत्पाद (MVP) और सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) एक ही होती है।

अग्र तालिका में MPP, MRP तथा VMP की तुलनात्मक स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

साधन की इकाइयां (Units of the Factor)	कुल भौतिक उत्पादन (Total Physical Production)	उत्पादन की कीमत (Price of the Production)	कुल आगम (Total Revenue)	सीमान्त भौतिक उत्पादकता (MPP)	सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP)	सीमान्त उत्पाद मूल्य (VMP = MPP × Price)
1	2	3	4	5	6	7
10	100	10	100 × 10 = 1000	—	—	—
11	100	10	110 × 10 = 1100	110 – 100 = 10 इकइयाँ	1100 – 1000 = 100 रुपया	10 × 10 = 100 रुपया

उपर्युक्त तालिका को देखने से ज्ञात है कि पूर्ण प्रतियोगिता में प्रति इकाई मूल्य 10 रुपया है, परिणामस्वरूप MRP तथा MVP 100 रुपये के बराबर है, परन्तु अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत स्थिति भिन्न होगी। अपूर्ण प्रतियोगिता में MRP, VMP के बराबर नहीं होगी। अपूर्ण प्रतियोगिता में VMP से MRP कम होती है।

औसत उत्पादकता का विचार (Concept of Average Productivity)

सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) के विचार का अध्ययन कर लेने के बाद औसत उत्पादकता के विचार को जान लेना आवश्यक है। किसी साधन की औसत उत्पादकता दो प्रकार की हो सकती है :

(1) **औसत सम्पूर्ण आगम उत्पादकता** (Average Gross Revenue Productivity or AGRP)—किसी साधन से प्राप्त कुल उत्पादकता को बेचकर जो कुल आय (TR) प्राप्त होती है उसे साधन की कुल इकाइयों की मात्रा से भाग देकर उस साधन की AGRP को ज्ञात किया जा सकता है। इस बात को निम्न प्रकार से समझाया जा सकता है :

$$\text{साधन की औसत सम्पूर्ण आगम उत्पादकता (AGRP)} = \frac{\text{कुल या सम्पूर्ण आगम (Total or Gross Revenue)}}{\text{साधन की कुल इकाइयाँ (Total Units of the Factor)}}$$

(2) **औसत विशुद्ध आगम उत्पादकता** (Average Net Revenue Productivity or ANRP)—कुल आगम से यदि अन्य साधनों के आगम के हिस्से को निकाल दें, तो हमें साधन विशेष से प्राप्त 'कुल विशुद्ध आगम' (Total Net Revenue) प्राप्त हो जायेगा। इस 'कुल विशुद्ध आगम' में साधन विशेष की कुल इकाइयों से भाग देने पर उस साधन की 'औसत विशुद्ध आगम उत्पादकता' (Average Net Revenue Productivity या ANRP) प्राप्त हो जायेगी। इस बात को हम निम्न प्रकार रख सकते हैं :

$$\text{साधन की औसत विशुद्ध आगम उत्पादकता (ANRP)} = \frac{\text{साधन विशेष के कारण कुल विशुद्ध आगम (Total Net Revenue Attributable of Factor)}}{\text{साधन विशेष की कुल इकाइयाँ (Total Units of the Factor)}}$$

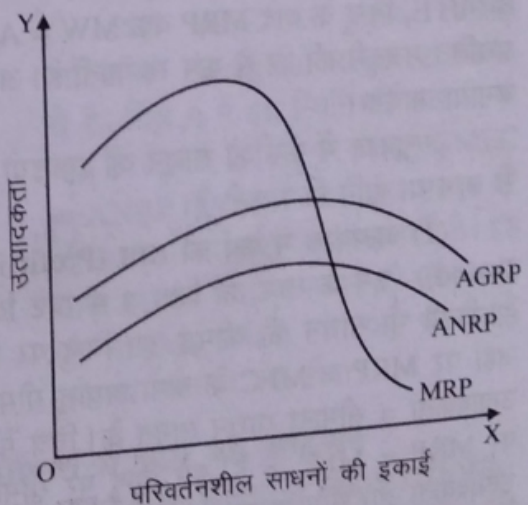

चित्र 2

सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) का आधार सीमान्त भौतिक उत्पादकता (MPP) होती है, इसलिए MRP रेखा का आकार भी उल्टे U-आकार (inverted U-shape) का होता है। MRP, AGRP तथा ANRP रेखाओं के आकार को चित्र 2 में स्पष्ट किया गया है। चित्र को देखने से ज्ञात होता है कि MRP रेखा AGRP तथा ANRP रेखाओं को उनके उच्चतम बिन्दुओं पर काटती है।

साधन बाजार में फर्म का सन्तुलन
(EQUILIBRIUM OF FIRM IN FACTOR MARKET)

जिस प्रकार वस्तु के बाजार में फर्म के सन्तुलन का अध्ययन किया जाता है उसी प्रकार साधन बाजार में फर्म के सन्तुलन का अध्ययन किया जा सकता है। उत्पादन बाजार फर्म के सन्तुलन का अभिप्राय यह है कि फर्म प्रत्येक साधन की कितनी मात्रा का प्रयोग करती है और उसके लिए कितना मूल्य देती है। हम उत्पादन बाजार में फर्म के सन्तुलन का अध्ययन पूर्ण तथा अपूर्ण दोनों ही प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत कर सकते हैं।

(I) पूर्ण प्रतियोगिता में साधन बाजार में फर्म का सन्तुलन
(EQUILIBRIUM OF THE FIRM IN FACTOR MARKET UNDER PERFECT COMPETITION)

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कोई भी फर्म साधन (Factor) की कीमत पर प्रभाव नहीं डाल सकती है। क्योंकि उद्योग द्वारा फर्म के लिए श्रम की मजदूरी दी हुई मान ली जाती है। संक्षेप में, फर्म को प्रचलित मजदूरी की दर पर श्रम की इकाई को क्रय करना होता है। इस दर पर वह श्रम की जितनी चाहे उतनी मात्रा क्रय कर सकती है, ऐसी दशा में सीमान्त मजदूरी (Marginal Wage or MW) और औसत मजदूरी (Average Wage or AW) एक-दूसरे के बराबर होती हैं, इसलिए उन्हें एक पड़ी हुई रेखा के द्वारा दिखाया जा सकता है। अतः पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत :

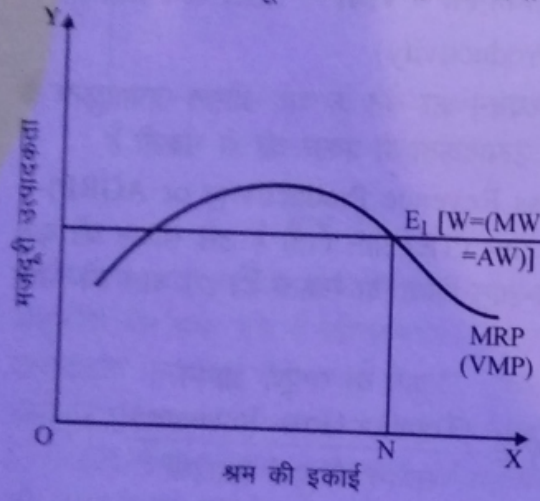

चित्र 3

प्रचलित मजदूरी = सीमान्त मजदूरी = औसत मजदूरी (Prevailing Wage = MW = AW) होती है।

फर्म के साम्य को चित्र 3 में स्पष्ट किया गया है। चित्र में MRP वक्र श्रम की सीमान्त आगम उत्पादकता है जो सीमान्त उपज के मूल्य (VMP) के बराबर है, क्योंकि बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की शर्त मान ली गयी है। MW = AW एक सीधी पड़ी सरल रेखा है जो इस बात को बताती है कि प्रचलित मजदूरी की दर पर फर्म जितनी मात्रा में चाहे श्रम को खरीद सकती है। फर्म का सन्तुलन वहां होगा जहां MRP वक्र MW = AW वक्र को ऊपर से नीचे को काटता है। चित्र 3 में यह स्थिति बिन्दु E_1 से स्पष्ट की गयी है। इस बिन्दु पर फर्म सन्तुलन की स्थिति में होगी और उसका लाभ भी अधिकतम होगा। फर्म के सन्तुलन E_1 पर फर्म प्रचलित मजदूरी की दर से ON मात्रा में श्रम को क्रय करेगी। E_1 बिन्दु के बाद MRP वक्र MW = AW के नीचे चला जाता है अर्थात् श्रम की सीमान्त उत्पादकता प्रचलित मजदूरी की दर से कम रह जाती है। अतः फर्म के द्वारा श्रम को ON मात्रा से अधिक मात्रा में नहीं लगाया जायेगा।

अल्पकाल में फर्म को साधन की इकाइयों के प्रयोग से लाभ या हानि हो सकती है।

(1) **अल्पकाल में फर्म को लाभ** (Profit in Short Period)—फर्म के लाभ को चित्र 4 में स्पष्ट किया गया है। किसी भी साधन की कीमत उस बिन्दु पर तय होगी जहां पर MRP = MFC के होगा अर्थात् सीमान्त आय उत्पादकता = सीमान्त साधन लागत के। चित्र में E बिन्दु पर MRP = MFC के है। इस बिन्दु पर सीमान्त आय उत्पादकता और सीमान्त साधन लागत एक-दूसरे के बराबर हैं, इसलिए साधन की कीमत NE या OP होगी। इस कीमत पर ON मात्रा में साधन की मांग की जायेगी।

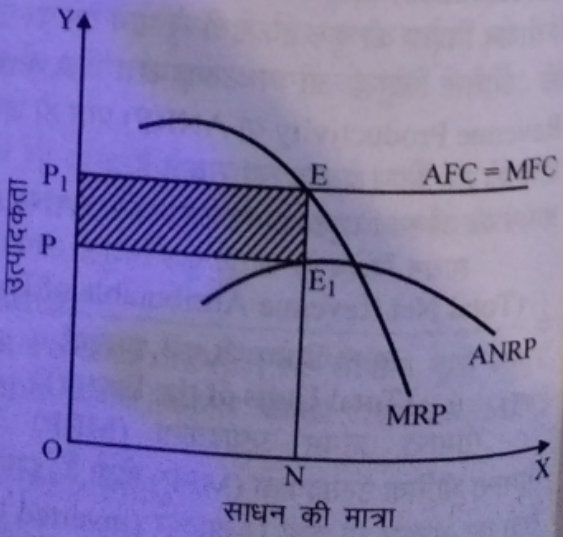

चित्र 4

फर्म को साधन की इकाइयों के लगाने से लाभ होगा अथवा हानि? इस बात का पता लगाने के लिए औसत